अध्याय 31

मिद्यानियों का विनाश

यह अध्याय मिद्यानियों के विनाश का विवरण देता है, अध्याय 25 में दर्ज बालपोर के साथ इस्राएलियों के द्वारा किए पाप में उनकी भूमिका के दण्डस्वरूप। उस वृतांत के अन्त में, परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा था कि वे मिद्यानियों को " सताएं" और उन्हें "मारें" (25:17)। इस आज्ञा का पालन इस्राएलियों के यरदन पार करने से पूर्व किया जाना था।

परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार, 12,000 पुरुषों की सेना ने मिद्यानी छावनी का नाश किया। जब इस्राएली सैनिक कुछ मिद्यानी स्त्रियों और लड़कों को घर ले आए, तो मूसा उनसे क्रुद्ध हुआ, और आज्ञा दी कि इन बंदियों का भी घात किया जाए। केवल युवा स्त्री बंदियों को जीवित रखा गया। इस अध्याय का अन्त युद्ध की लूट के वितरण के वृत्तान्त के साथ होता है।

मिद्यानियों की पराजय के विवरण के अतिरिक्त, अध्याय 31 में युद्ध तथा लूट के वितरण से संबंधित कुछ नियम भी दिए गए हैं। निःसंदेह इनका उद्देश्य आगे आने वाले कनान की विजय के अभियान में इस्राएलियों का मार्गदर्शन करना था।

युद्ध का संचालन (31:1-12)

1फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 2"मिद्यानियों से इस्राएलियों का बदला ले; बाद को तू अपने लोगों में जा मिलेगा।" 3तब मूसा ने लोगों से कहा, "अपने में से पुरुषों को युद्ध के लिये हथियार धारण कराओ कि वे मिद्यानियों पर चढ़के उनसे यहोवा का बदला लें। 4इस्राएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक एक हज़ार पुरुषों को युद्ध करने के लिये भेजो।" 5तब इस्राएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक एक हज़ार पुरुष चुने गये, अर्थात् युद्ध के लिये हथियार-बन्द बारह हज़ार पुरुष। 6प्रत्येक गोत्र में से उन हज़ार हज़ार पुरुषों को, और एलीआज़ार याजक के पुत्र पीनहास को, मूसा ने युद्ध करने के लिये भेजा, और उसके हाथ में पवित्रस्थान के पात्र और वे तुरहियाँ थीं जो साँस बाँध बाँध कर फूँकी जाती थीं। 7और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार उन्होंने मिद्यानियों से युद्ध करके सब पुरुषों को घात किया। 8और दूसरे जूझे हुओं को छोड़ उन्होंने एबी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा नामक मिद्यान के पाँचों राजाओं को घात किया; और बोर के पुत्र बिलाम को भी उन्होंने तलवार से घात किया। 9और इस्राएलियों ने मिद्यानी स्त्रियों को बाल-बच्चों समेत बन्दी बना लिया; और उनके गाय-बैल, भेड़-बकरी, और उनकी

सारी सम्पत्ति को लूट लिया। 10और उनके निवास के सब नगरों, और सब छावनियों को फूँक दिया; 11तब वे, क्या मनुष्य क्या पशु, सब बन्दियों और सारी लूट-पाट को लेकर 12यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर, मोआब के अराबा में, छावनी के निकट, मूसा और एलीआज़ार याजक और इस्राएलियों की मण्डली के पास आए।

आयतें 1, 2. परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया **मिद्यानियों से ... बदला ले**। यह बदला **इस्राएलियों** के लिए था, परन्तु जो इस लेख को वैसा स्वीकार करता है जैसा लिखा है, वह यह नहीं कह सकता है कि इस्राएलियों द्वारा मिद्यानियों का नाश करना इस्राएलियों का अपना विचार था। मिद्यान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा परमेश्वर ने की थी।

परमेश्वर ने प्रकट किया कि इस "बदले" को ले लेने के पश्चात मूसा **अपने लोगों में जा मिलेगा**, जो यह दिखाने के लिए अभिव्यक्ति है कि उसका देहान्त हो जाएगा और वह अपने उन पूर्वजों से जा मिलेगा जो मृत्यु में उससे पहले चले गए।

आयत 3. यद्यपि परमेश्वर ने लोगों के लिए आज्ञा दी है कि वे अपना बदला न लें (लैव्य. 19:18; नीति. 25:21, 22; देखें मत्ती 5:38-42; रोम. 12:19-21), किन्तु यह **यहोवा का बदला** था। परमेश्वर को पूर्ण अधिकार है कि वह उनसे बदला ले जो उसके विरुद्ध हो जाते हैं। वास्तव में, बाइबल के आरंभ से लेकर अन्त तक, इस बात की शिक्षा है कि जो उसके अनाज्ञाकारी रहते हैं परमेश्वर उन से कैसे बदला लेता है। इसके अतिरिक्त यह खण्ड चित्रित करता है कि परमेश्वर के लोगों की हानि करना, परमेश्वर की हानि करना है; और इसलिए उसके बदले के लायक है।

आयतें 4, 5. परमेश्वर के बदले को चुकाने का कार्य लोगों के थोड़े से ही प्रतिनिधियों को सौंपा गया। **प्रत्येक गोत्र के एक एक हज़ार पुरुषों**, कुल मिलाकर बारह हज़ार पुरुषों को मिद्यानियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिये चुना गया।

आयत 6. परन्तु वे अकेले नहीं गए; क्योंकि **एलीआज़ार याजक के पुत्र पीनहास** भी उनके साथ गया। महायाजक, एलीआज़र, स्वयं सेना के साथ नहीं गया, क्योंकि यह राष्ट्र के लिए बहुत बुरा होता यदि किसी मृतक की देह से संपर्क हो जाने के कारण वह अशुद्ध हो जाता (लैव्य. 21:10, 11)। अनुष्ठानों के अनुसार शुद्ध होने का प्रश्न महायाजक हारून के समय में भी रहा होगा जब उसके पुत्र एलिआज़र को उन 250 मनुष्यों के धूपदानों को एकत्रित करने को कहा जो मारे गए थे (16:36-40) और जब एलिआज़र छावनी के बाहर लाल बछिया के बलिदान के लिए गया था (19:1-10)।

युद्ध के समय में याजक का कर्तव्य था इस्राएल की सेना को प्रोत्साहित करे, उन्हें स्मरण करवाने के द्वारा कि परमेश्वर उनके साथ है (व्यव. 20:1-4)। इस कार्य के लिए पीनहास आदर्श व्यक्ति था, क्योंकि उसने परमेश्वर के प्रति उत्साह को प्रदर्शित किया था उस इस्राएली पुरुष और मिद्यानी स्त्री को मार डालने के द्वारा जो छावनी में व्यभिचार कर रहे थे (गिनती 25:7, 8)।

पीनहास ने अपने साथ **पवित्रस्थान के पात्र और वे तुरहियाँ** ले लीं। "पवित्रस्थान के पात्र" और "पवित्र पात्रों" (NIV) की पहचान नहीं दी गई है। उनके विषय बहुत से सुझाव दिए गए हैं, जिनमें उनका: वाचा का सन्दूक, उरिम और थुमिम, और मण्डप के कुछ छोटे पात्रों का होना सम्मिलित है। "तुरहियां" वे दो छोटी तुरहियां थीं जिन्हें इस्राएल के अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में जाने के समय प्रयोग किया जाना था (10:2, 9)।

याजकों की उपस्थिति, पवित्र पात्रों, और तुरहियों का होना इस बात का सूचक था कि इस्राएल जिस युद्ध के लिए जा रहा था वह एक पवित्र युद्ध था। वे परमेश्वर की ओर से युद्ध में जा रहे थे और उसी पर अपनी विजय के लिए भरोसा रखते थे।

आयत 7. मिद्यानियों से युद्ध के परिणाम थोड़े से ही शब्दों में दिए गए हैं: וַיַּהַרְגוּ כָּל־זָכָר (*वय्याहर्गु कोल-ज़कर*), जिसका अनुवाद होता है **सब पुरुषों को घात किया**। संभवतः, ये शब्द उस व्यापक अभियान का एक बहुत ही संक्षिप्त ब्यौरा हैं (31:10)। परन्तु इस भाषा से हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि इस्राएलियों ने एक जाति के रूप में मिद्यानियों का अन्त कर दिया। स्पष्टतः मिद्यानी अन्य स्थानों पर भी रहते थे, और बाद में न्यायियों के समय में उन्होंने इस्राएलियों पर हमले किए (न्यायियों 6-8)। मिद्यानियों को "कबीलों का महा संघ, जिन के साथ छोटे समूह जैसे कि इश्माएली (उत्पत्ति 37:28; न्यायियों 8:22, 24), मोआबी (गिनती 22:4, 7), अमालेकी (न्यायियों 6:3, 33), और एपा (उत्पत्ति 25:4; यशा. 60:6) भी सम्मिलित थे" कहा गया है।[1] ये लोग सीनै प्रायद्वीप, नेगेव, और ट्रांसजॉर्डन में निवास करते थे। यहाँ उन मिद्यानियों का उल्लेख है जो मोआबियों के साथ जुड़े हुए थे।

आयत 8. मिद्यान के विरुद्ध इस्राएली सेना ने सभी पुरुषों और **एबी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा नामक मिद्यान के पाँचों राजाओं को घात किया**। ये राजा एमोरी राजा सीहोन के अधीनस्थ थे (यहोशू 13:21), जो कि वादी अर्नोन के उत्तर में स्थित मोआब के मैदानों पर राज्य करता था। इस्राएल की सीहोन पर विजय का वृत्तान्त इस पुस्तक में पहले आ चुका है (21:21-26)। उन पाँचों मिद्यानी राजाओं में से एक, सूर, उस स्त्री कोज़बी का पिता था, जिसे पीनहास ने इस्राएली पुरुष के साथ व्यभिचार करते हुए मार डाल था (25:7, 8, 15)।

एक और क्षति, **बोर के पुत्र बिलाम** भी था (अध्याय 22-24)। आराम को लौट जाने के स्थान पर वह उसी क्षेत्र में ही रह गया था और उसने ही उस योजना को विकसित किया था जिसके कारण इस्राएल पाप में पड़ा (31:16)।

आयतें 9-11. युद्ध में इस्राएलियों ने बहुत से बन्दी बनाए और बहुत **लूट** जिसमें **स्त्रियाँ**, बच्चे, उनके गाय-बैल, भेड़-बकरी, और उनकी सारी **सम्पत्ति** भी थे। और उन्होंने उनके निवास के सब **नगरों, और सब छावनियों को फूँक दिया**।

आयत 12. फिर वे लौट कर **यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर, मोआब के अराबा में** आए। उन्होंने **मूसा और एलीआज़ार याजक और इस्राएलियों की मण्डली** को लूट का सामान सौंप दिया।

मिद्यानियों के नाश की तुलना उस उग्र शल्यक्रिया से की गई है जिसे करने की आवश्यकता एक कैंसर के रोगी के जीवन रक्षा के लिए होती है। जिस कैंसर को कनान और ट्रांसजॉर्डन से खेद सहित निकालने की आवश्यकता पड़ी वह ऐसी भ्रष्ट जाति थी जिसका पाप इस्राएलियों को नाश कर सकता था (और लगभग कर ही दिया था)।[2] बाद में, लेख से प्रकट होता है कि मिद्यान पर इस्राएल की विजय बिना एक भी सैनिक की क्षति के संभव हो गई (31:49)।

युद्ध के नियम (31:13-54)

[13]तब मूसा और एलीआज़ार याजक और मण्डली के सब प्रधान छावनी के बाहर उनका स्वागत करने को निकले। [14]और मूसा सहस्रपति-शतपति आदि, सेनापतियों से, जो युद्ध करके लौटे आते थे क्रोधित होकर कहने लगा, [15]"क्या तुम ने सब स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया? [16]देखो, बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात इन्हीं ने कराया, और यहोवा की मण्डली में मरी फैली। [17]इसलिये अब बाल-बच्चों में से हर एक लड़के को, और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुँह देखा हो उन सभों को घात करो। [18]परन्तु जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुँह न देखा हो उन सभों को तुम अपने लिये जीवित रखो। [19]और तुम लोग सात दिन तक छावनी के बाहर रहो, और तुम में से जितनों ने किसी प्राणी को घात किया, और जितनों ने किसी मरे हुए को छूआ हो, वे सब अपने अपने बन्दियों समेत तीसरे और सातवें दिनों में अपने अपने को पाप छुड़ाकर पावन करें। [20]और सब वस्त्रों, और चमड़े की बनी हुई सब वस्तुओं, और बकरी के बालों की और लकड़ी की बनी हुई सब वस्तुओं को पावन कर लो।"

[21]तब एलीआज़ार याजक ने सेना के उन पुरुषों से जो युद्ध करने गए थे कहा, "व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी है वह यह है: [22]सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन, और सीसा, [23]जो कुछ आग में ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा; तौभी वह अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए; परन्तु जो कुछ आग में न ठहर सके उसे जल में डुबाओ। [24]और सातवें दिन अपने वस्त्रों को धोना, तब तुम शुद्ध ठहरोगे; और तब छावनी में आना।"

[25]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [26]"एलीआज़ार याजक और मण्डली के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को साथ लेकर तू लूट के मनुष्यों और पशुओं की गिनती कर; [27]तब उनको आधा-आधा करके एक भाग उन सिपाहियों को जो युद्ध करने को गए थे, और दूसरा भाग मण्डली को दे। [28]फिर जो सिपाही युद्ध करने को गए थे, उनके आधे में से यहोवा के लिये, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ, [29]पाँच सौ के पीछे एक को कर मानकर ले ले; और यहोवा की भेंट करके एलीआज़ार याजक को दे दे। [30]फिर इस्राएलियों के आधे में से, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ, क्या किसी प्रकार का पशु हो, पचास पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दे।" [31]यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी, मूसा और

एलीआज़ार याजक ने किया।

[32]जो वस्तुएँ सेना के पुरुषों ने अपने अपने लिये लूट ली थीं उनसे अधिक की लूट यह थी; अर्थात् छः लाख पचहत्तर हज़ार भेड़-बकरियाँ, [33]बहत्तर हज़ार गाय-बैल, [34]इकसठ हज़ार गदहे, [35]और मनुष्यों में से जिन स्त्रियों ने पुरुष का मुँह नहीं देखा था वह सब बत्तीस हज़ार थीं। [36]और इसका आधा, अर्थात् उनका भाग जो युद्ध करने को गए थे, उसमें भेड़-बकरियाँ तीन लाख साढ़े सैंतीस हज़ार, [37]जिनमें से पौने सात सौ भेड़-बकरियाँ यहोवा का कर ठहरीं। [38]और गाय-बैल छत्तीस हज़ार, जिनमें से बहत्तर यहोवा का कर ठहरे। [39]और गदहे साढ़े तीस हज़ार, जिनमें से इकसठ यहोवा का कर ठहरे। [40]और मनुष्य सोलह हज़ार जिन में से बत्तीस प्राणी यहोवा का कर ठहरे। [41]इस कर को जो यहोवा की भेंट थी मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार एलीआज़ार याजक को दिया।

[42]इस्राएलियों की मण्डली का आधा [43]तीन लाख साढ़े सैंतीस हज़ार भेड़-बकरियाँ, [44]छत्तीस हज़ार गाय-बैल, [45]साढ़े तीस हज़ार गदहे, [46]और सोलह हज़ार मनुष्य हुए। [47]इस आधे में से, जिसे मूसा ने युद्ध करनेवाले पुरुषों के पास से अलग किया था, यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने, क्या मनुष्य क्या पशु, पचास पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दिया।

[48]तब सहस्रपति-शतपति आदि, जो सरदार सेना के हज़ारों के ऊपर नियुक्त थे, वे मूसा के पास आकर कहने लगे, [49]"जो सिपाही हमारे अधीन थे उनकी तेरे दासों ने गिनती ली, और उनमें से एक भी नहीं घटा। [50]इसलिये पायजेब, कड़े, मुंदरियाँ, बालियाँ, बाजूबन्द, सोने के जो गहने, जिसने पाया है, उनको हम यहोवा के सामने अपने प्राणों के निमित्त प्रायश्चित्त करने को यहोवा की भेंट करके ले आए हैं। [51]तब मूसा और एलीआज़ार याजक ने उन से वे सब सोने के नक्काशीदार गहने ले लिए। [52]और सहस्रपतियों और शतपतियों ने जो भेंट का सोना यहोवा की भेंट करके दिया वह सब का सब सोलह हज़ार साढ़े सात सौ शेकेल था। ([53]योद्धाओं ने तो अपने अपने लिये लूट ले ली थी।) [54]यह सोना मूसा और एलीआज़ार याजक ने सहस्रपतियों और शतपतियों से लेकर मिलापवाले तम्बू में पहुँचा दिया कि इस्राएलियों के लिये यहोवा के सामने स्मरण दिलानेवाली वस्तु ठहरे।

इस अध्याय का दूसरा (और अधिक बड़ा) भाग मिद्यानियों के विरुद्ध युद्ध के परिणाम से संबंधित है। 31:13-54 का मुख्य ज़ोर युद्ध के नियमों के स्पष्टीकरण पर है, जो विशेषकर तब लागू होंगे जब इस्राएल कनान देश में प्रवेश करके अपना विजय अभियान आरंभ करेगा। युद्ध के अन्य नियम व्यवस्थाविवरण 20 में मिलते हैं।

आयत 13. जब **मूसा और एलीआज़ार याजक** और इस्राएल के अन्य **प्रधान छावनी के बाहर** उनका स्वागत करने के लिए गए, तो महत्वपूर्ण नीतियाँ स्थापित हुईं। सबसे पहला प्रश्न जो उठा था वह था, "जो बन्दी बनाए गए हैं उनके साथ क्या किया जाना चाहिए?"

कभी-कभी तो इस्राएलियों को न तो लूट लेनी थी और न ही बन्दी बनाने थे।

ऐसा नगर जिसका उसके निवासियों तथा उनकी संपत्ति के साथ पूर्णतः नाश किया जाना था, उसे "प्रतिबन्ध के आधीन" (חֵרֶם, *केरेम)* कहा गया (देखिए यहोशू 6:17)।[3] "प्रतिबन्ध" के लागू होने से इस्राएल को युद्ध द्वारा कोई आर्थिक लाभ नहीं होता; इससे यह स्पष्ट था कि वह युद्ध वास्तव में पवित्र युद्ध होता।

आयत 14. जब मिद्यान के साथ हुए युद्ध की लूट के साथ **सेना** लौट कर आयी, तो परमेश्वर द्वारा उन्हें दी गई विजय को लेकर वे आनन्दित हो रहे होंगे। परन्तु, **मूसा सेनापतियों से क्रोधित हुआ**।

आयतें 15, 16. सेना ने मिद्यानी **स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया** और वे उन्हें घर ले आए। इन स्त्रियों ने **बिलाम की सम्मति से** इस्राएली पुरुषों को पाप में डाल दिया था। इन स्त्रियों के साथ इस्राएलियों के पाप और उनके द्वारा बाल के **पोर** की उपासना के कारण, **मण्डली में मरी फैली**।

आयतें 17, 18. परिणामस्वरूप, मूसा ने बंदियों के विषय ये नियम दिए: (1) हर एक **लड़के** को मारा डाला जाएगा। (2) **जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुँह देखा हो उन सभों को घात करो।** (3) कुँवारी **लड़कियों** को **जीवित** रखो; वे सब दासियाँ, पुत्रियां, इस्राएलियों के लिए पत्नियां बन सकती थीं और इस्राएलियों के समान ही रह सकती थीं (देखिए व्यव. 21:10-14)।

इन नियमों की क्या आवश्यकता थी? वयस्क पुरुष इस्राएलियों के विरुद्ध लड़े थे इसलिए मृत्युदण्ड के दोषी और योग्य थे। स्त्रियों ने (एक वर्ग के रूप में) इस्राएलियों को लुभाया था और उनसे पाप करवाया था, जिसके कारण अन्ततः 24,000 मारे गए। इन दोनों ही के लिए मिद्यानियों का दोष उनके लिए मृत्युदण्ड का कारण था। लड़के भविष्य के लिए खतरा थे; वे बड़े होकर योद्धा बन सकते थे जो इस्राएल के विरुद्ध हथियार उठा सकते थे। परन्तु लड़कियाँ मासूम थीं, उपयोगी हो सकती थीं, और राष्ट्र के लिए कोई खतरा नहीं थीं। प्रत्यक्षतः आने वाले युद्धों में इस विचारधारा के अनुसार बंदियों के साथ व्यवहार होना था।

आयत 19. इस खण्ड में जिस दूसरे प्रश्न का उत्तर दिया गया है वह है, "युद्ध में मृतकों के संपर्क में आने से होने वाली अशुद्धता से कैसे शुद्ध हुआ जा सकता था?" मूसा और एलिआज़र ने मार्गदर्शन प्रदान किया। पहला, योद्धाओं को **छावनी के बाहर** रहकर अपने आप को **पावन** करने के लिए **सात दिन** तक प्रक्रियाओं को करना था। योद्धाओं और बंदियों, दोनों को ही, मरे हुओं को छूने के कारण **तीसरे और सातवें दिनों में अपने अपने को पाप छुड़ाकर पावन करें** (देखें 19:12, 19)।

आयत 20. दूसरा, उन्हें निर्देश दिया गया कि वे **सब वस्त्रों, और चमड़े की बनी हुई सब वस्तुओं, और बकरी के बालों की और लकड़ी की बनी हुई सब वस्तुओं को पावन कर** लें। पावन होने की विधि सात दिनों के पूरे होने पर ही संपूर्ण होनी थी।

आयतें 21-24. तीसरा, जो सामान युद्ध में उन्होंने लूट लिया था उसे भी शुद्ध करना था: **सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन, और सीसा**, जो कुछ **आग में ठहर सके** उसको **आग में डालो** और फिर उसे जल से शुद्ध करना था। जो कुछ आग में न ठहर सके उसे केवल **जल** ही के द्वारा शुद्ध किया जाना था। आर. के. हैरिसन ने इन

शुद्ध करने की विधियों को "स्वस्थ सफाई-संबंधी एवं स्वास्थ्य-संबंधी सिद्धांतों" पर आधारित बताया। धातु की बनी हुई वस्तुओं को आग में डालने से वे जीवाणु-रहित हो जाएँगी; कोई भी हानिकारक कीटाणु या जीवाणु मारे जाएँगे। फिर उन वस्तुओं पर "लाल बछिए की राख के जल का छिड़काव" होगा। परन्तु जो वस्तुएँ जल सकने वाली थीं उन्हें "शुद्धिकरण के जल में डाला जाना था।"[4]

युद्ध के पुरुषों के **वस्त्रों** को **सातवें दिन** धोया जाना था। इसके बाद सिपाही शुद्ध हो जाते, और वे **छावनी में आ** सकते थे। इस खण्ड का सन्देश है कि मृत्यु, वह चाहे परमेश्वर के बदले के कारण ही क्यों न हो, उसके लोगों को दूषित कर देती थी। जो लोग परमेश्वर के निकट थे, जैसे कि छावनी में रहने वाले इस्राएली थे, उन्हें यह दूषित होने से बचना था। यदि वे मृत्यु के संपर्क में आते तो उनका शुद्ध होना आवश्यक था। शुद्ध होने के लिए अध्याय 31 में दी गई प्रक्रियाएं पुस्तक में इससे पूर्व दी गई प्रक्रियाओं के अनुसार हैं। (सामान्यतः अशुद्ध होने के विषय में देखें 5:1-4 और 12:14, 15; मृत्यु के द्वारा होने वाली अशुद्धता के लिए देखें 19:11-22.)

आयतें 25, 26. इस्राएलियों के सामने तीसरा प्रश्न था "लूट को कैसे विभाजित किया जाए?" आरंभ में, इस्राएल के अगुवों - **मूसा, एलीआज़ार** और **मण्डली के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को - लूट के मनुष्यों और पशुओं की गिनती** करनी थी। शब्द "लूट-पाट," "बंदियों," और लूट का 31:11, 12, 26, 27 में एक ही अर्थ है।

आयत 27. दो सिद्धान्त **लूट** के विभाजन के लिए स्थापित किए गए। पहला था कि युद्ध में जाने वाले **सिपाहियों को**, और सारी **मण्डली को** बराबर-बराबर का भाग मिलना था। इस सिद्धान्त को हम बाद में दाऊद की नीति में देखते हैं कि जो लोग सामान के साथ रुके थे उन्हें उनके साथ बराबर का भाग मिलना था जो युद्ध के लिए गए थे (1 शमूएल 30:24, 25)।

आयतें 28, 29. दूसरे सिद्धांत के विषय, मूसा को कहा गया कि धार्मिक संस्थानों के कार्यों के लिए वह लूट के दोनों भागों पर **कर मानकर ले ले**। बन्दी बनाए गए **क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ,** सिपाहियों को दिए गए सब सामान में से $^1/_{500}$ भाग को **यहोवा की भेंट करके एलीआज़ार याजक को दे दे।**

आयतें 30, 31. लूट के दूसरे **आधे** को सभी इस्राएलियों में बाँटना था। उस में से **क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ, क्या किसी प्रकार का पशु हो,** $^1/_{50}$ लेवियों को देना था - जिनका कार्य यहोवा के निवास की रखवाली करना था (1:53)। खण्ड का अन्त इस कथन के साथ होता है कि **इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी, मूसा और एलीआज़ार याजक ने किया।**

आयतें 32-35. इस पुस्तक के स्वभाव के अनुसार, मिद्यानियों से **लूट लीं गई** वस्तुओं की सूची दी गई है: 675,000 **भेड़-बकरियां**, 72,000 **गाए-बैल**, 61,000 **गदहे**, और 32,000 युवा **स्त्रियाँ**। लूट की विशाल संख्या और इस तथ्य के कारण कि एक भी इस्राएली सिपाही नहीं मारा गया, कुछ को अध्याय 31 में वर्णित युद्ध

के ऐतिहासिक होने पर संदेह हुआ है। परन्तु, सी. एफ. कीएल और एफ. डेलीट्ज़श्च ने अन्य ऐतिहासिक घटनाओं को उद्धृत किया है जिनमें सेनाओं ने बहुत हानि की किन्तु स्वयं कोई हानि नहीं उठाई, और यह दिखाया कि न तो बंदियों की संख्या ("32,000" युवा स्त्रियाँ) और न ही लूट की मात्रा अनुचित है।[5]

आयतें 36-41. ऊपर दिए गए सूत्र के अनुसार, लेखक ने स्पष्ट किया कि दोनों समूहों को लूट का कितना-कितना सामान मिला और परमेश्वर को कितना दिया गया। जो **आधा युद्ध** करने वाले सिपाहियों के मध्य बाँटा गया उसमें **भेड़-बकरियां** (337,500), **गाए-बैल** (36,000), **गदहे** (30,500), और **मनुष्य** (16,000) हुए। इस आधे पर लगाया गया कर जो **एलीआज़ार याजक को दिया** गया वह था: **भेड़-बकरियां** (675), **गाए-बैल** (72), **गदहे** (61), और **मनुष्य** (32).

आयतें 42-47. पशुओं और **मनुष्यों** की सूची की पुनः आवृत्ति हुई है, इस्राएल की **मण्डली के आधे** का ब्यौरा दिया गया है। इसमें से **यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने, क्या मनुष्य क्या पशु, पचास पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दिया।**

आयतें 48-50. लूट पर लगाए गए कर के अतिरिक्त, इस्राएल के सैनिकों के सरदारों ने स्वेच्छा से परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए भेंट दी। सिपाहियों की गिनती लेने के पश्चात, **सहस्रपति-शतपति आदि** ने पुष्टि की, कि मिद्यान से हुए युद्ध में इस्राएल ने एक भी पुरुष की हानि नहीं उठाई थी। कृतज्ञ होकर ये सरदार भांति-भांति के बहुमूल्य आभूषण, **सोने के गहने** परमेश्वर को अर्पित करने के लिए लेकर आए। उन्होंने कहा कि इस **भेंट** को देने का उनका उद्देश्य था कि वे **अपने प्राणों के निमित्त प्रायश्चित्त करने को यहोवा की भेंट करके ले आए हैं।** उन्हें क्यों यह "प्रायश्चित करना" पड़ा? संभवतः वे उन पापों के लिए प्रायश्चित कर रहे थे जो उन्होंने अनजाने में अभी लड़े गए युद्ध में किए होंगे। जिस युद्ध को वे अभी लड़ रहे थे वह उचित था, परन्तु उस युद्ध के आचरण में उनसे व्यक्तिगत रीति से कुछ गलत हो गया होगा।

आयतें 51-54. मूसा और एलीआज़ार याजक ने सैनिक सरदारों से वे भेंट **ले लिए।** जो सोना वे लेकर आए थे **वह सब का सब सोलह हज़ार साढ़े सात सौ शेकेल था।** यह लूट के उस भाग से पृथक था जो उन्होंने अपने लिए रख लिया था। मूसा और एलिआज़र ने योद्धाओं की भेंट को लेकर मिलापवाले तम्बू में पहुँचा दिया **कि इस्राएलियों के लिये यहोवा के सामने स्मरण दिलानेवाली वस्तु ठहरे।**

परमेश्वर द्वारा युद्ध में विजय से प्राप्त होने वाली सामग्री के विषय इस्राएल को दिए गए इन नियमों के द्वारा क्या सिद्धान्त सिखाए गए? युद्ध में ली गई लूट को युद्ध में जाने वालों और उनकी सहायता करने वालों, चाहे वे घर पर ही क्यों न रहे हों, दोनों के मध्य बाँटा जाना चाहिए। परमेश्वर की सहायता से प्राप्त होने वाली किसी भी सामग्री का कुछ भाग उसे वापस दिया जाना चाहिए। जो परमेश्वर उन्हें आशीषित करता है उसे लोगों द्वारा स्वेच्छा एवं कृतज्ञता से देना सही है। ये भेंट 29:39 में उल्लेखित "स्वेच्छाबलियों" का उदाहरण प्रदान करती हैं।

अनुप्रयोग

युद्ध क्षेत्र से निकलने वाले सत्य (अध्याय 31)

बहुधा फिल्मों और पुस्तकों में कहानी की, अगली कड़ियाँ होती हैं जिनमें मूल फिल्म या उपन्यास के वही पात्र होते हैं और वे उसी घटनाक्रम को आगे बढ़ाते हैं। अध्याय 31 भी अध्याय 25 में इस्राएल द्वारा "मोआब की लड़कियों" के साथ किए गए पाप के कथानक की अगली कड़ी का कार्य करता है। पहली कहानी का अन्त हुआ था जब परमेश्वर ने अपने लोगों को आज्ञा दी कि "मिद्यानियों को सता, और उन्हें मार; क्योंकि वे तुम को छल कर के सताते हैं" (25:17, 18)। यह अगली कड़ी इस बिंदु से आगे आरंभ होती है, परमेश्वर के निर्देश के साथ कि इस्राएल "मिद्यानियों से इस्राएलियों का बदला ले" (31:2)। यह मिद्यान के साथ इस्राएल के युद्ध और उसके परिणामों के बारे में बताता है।

अध्याय 31 युद्ध भूमि को दर्शाता है। यह मिद्यान के साथ इस्राएल के युद्ध, मिद्यानियों के नाश, और युद्ध में विजय के पश्चात परमेश्वर ने इस्राएलियों से क्या चाहा, के बारे में है। इस युद्धभूमि के माध्यम से हम कुछ महत्वपूर्ण सत्यों को पहचानते हैं।

पहला, परमेश्वर के लोगों का विरोध करना परमेश्वर का विरोध करना है। अध्याय का आरंभ परमेश्वर द्वारा मिद्यान के विरुद्ध इस्राएल के युद्ध करने के निर्देश के साथ होता है (31:1-7)।

मिद्यान का पाप इतने घोर विनाश के योग्य क्यों ठहरा? मिद्यानियों को अकारण दण्ड नहीं दिया जा रहा था! इस्राएल उनको सता रहा था क्योंकि वे इस्राएल के विरुद्ध थे। "सताने" के लिए इब्रानी शब्द צָרַר *(त्सरार)* को 25:17, 18 में दोहराने से संकेत मिलता है कि मिद्यानियों को वही मिल रहा था जो उन्होंने दिया था। उनके कारण, 24,000 इस्राएली मारे गए थे (25:9)। मिद्यानी लड़कियों के साथ किए गए पाप के लिए इस्राएलियों ने भारी कीमत चुकाई थी; फिर मिद्यानियों ने इस्राएलियों को पाप में फंसाने के लिए इस से भी बढ़कर कीमत चुकाई। जब इस्राएल ने "मिद्यान के विरुद्ध युद्ध किया," तो उन्होंने "सब पुरुषों को घात किया," "मिद्यान के राजाओं को मारा," "मिद्यान की स्त्रियों और उनके बच्चों को बन्दी बनाया," "उनके गाए-बैल, भेड़-बकरी, और उनकी सारी संपत्ति को लूट लिया," और "उनके सब नगरों को फूंक दिया" (31:7-10)।

मिद्यानियों का पाप केवल इस्राएल ही के विरुद्ध नहीं था, वरन परमेश्वर के विरुद्ध भी था, क्योंकि वह अपनी पहचान अपने लोगों के साथ बनाता है। आयात 2 के अनुसार, इस्राएल को "इस्राएल के पुत्रों" के लिए बदला लेना था। आयत 3 कहती है, उन्हें "यहोवा का बदला" लेना था। क्योंकि इस्राएली परमेश्वर के लोग थे, इस्राएल का विरोध करना परमेश्वर का विरोध करना था। इसलिए जो परमेश्वर के लोगों के विरोधी थे वे परमेश्वर के प्रकोप के भी योग्य थे।

हम ऐसा ही विचार नए नियम में भी पाते हैं: पौलुस ने कहा कि "क्योंकि

परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे" (2 थिस्स. 1:6)। आज परमेश्वर अपने लोगों, कलीसिया के साथ अपनी पहचान बनाता है, इस सीमा तक कि यदि कोई चर्च को क्लेश देता है, तो परमेश्वर उसे क्लेश देगा। हमें परमेश्वर के लोगों, उसकी कलीसिया के साथ भला बर्ताव करना चाहिए। चर्च को सताना या उस पर हमला करना, परमेश्वर पर हमला करना और आत्मिक आत्महत्या कर लेना है! नए नियम में जब पौलुस ने कलीसिया को सताया, तो वह यीशु को सता रहा था (प्रेरितों 9:4, 5)। मसीह और उसकी कलीसिया के शत्रु अनन्तकाल के दण्ड के भागी होंगे (देखिए प्रका. 6:9-11; 20:4, 12-15)।

दूसरा, परमेश्वर पाप को दण्ड देगा। मिद्यान पर किए गए हमले में न केवल पुरुष और राजा मारे गए, परन्तु इस्राएल ने स्त्रियों और बच्चों को बन्दी बनाया, उनकी सारी संपत्ति लूट ली और उनके नगर फूंक दिए। जब इस्राएली सिपाही उनके स्त्री बंदियों के साथ लौटे तो मूसा क्रोधित हुआ। इस्राएल के विरुद्ध पाप में स्त्रियों की ही प्रमुख भूमिका थी; वे ही थीं जिन्होंने "बिलाम की सम्मति से, इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात कराया" (31:16)। परिणामस्वरूप, मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे उन स्त्रियों को, उनके लड़कों सहित मार डालें (31:17)।

इस स्थिति में स्त्रियों का नाश करना समस्यापूर्ण नहीं है। वे पाप की दोषी थीं - मूसा के कहने से प्रतीत होता है कि पुरुषों से, जो इस्राएल के विरुद्ध लड़े थे, और भी अधिक दोषी। उनका दोष उन्हें नाश के योग्य ठहराता था। परन्तु मासूम युवा बच्चों का नाश करना प्रश्न उठाता है। दोषियों के साथ मासूमों को भी दण्ड का भागी बनाना कुछ लोगों के लिए परमेश्वर की भलाई या उसके अस्तित्व पर ही प्रश्न उठाता है। वे कह सकते हैं, "यदि परमेश्वर मासूम बच्चों को मार या अपने लोगों द्वारा मरवा सकता है, तो मैं ऐसे परमेश्वर में विश्वास नहीं कर सकता हूँ।" वे यह भी आपत्ति कर सकते हैं कि परमेश्वर के लिए दोषी मिद्यानियों के साथ निर्दोषों को भी मरवा देना सही या उचित नहीं था। हम "निर्दोष" मिद्यानियों के मारे जाने को यह कहकर समझा सकते हैं कि वे "दोषी" मिद्यानियों के सामूहिक दोष में साझा थे या यह कहकर कि वे इस्राएल की आत्मिक भलाई के लिए ख़तरा थे।

तीसरा, परमेश्वर के मार्ग हमारे मार्गों से ऊपर होते हैं। इन लोगों के विनाश के संबंध में सबसे अच्छा समाधान है यह स्वीकार कर लेना कि परमेश्वर के मार्ग हमारे मार्ग नहीं हैं, और उसके विचार हमारे विचार नहीं हैं (यशा. 55:8, 9)। मिद्यानियों के लड़कों के मारे जाने पर विचार करने में, हम परमेश्वर के बारे में कुछ सीखते हैं: वह सार्वभौमिक है, और कभी-कभी हम उसके मार्गों को समझ नहीं पाते हैं। ऐसी स्थितियों में, हमें यही भरोसा करना होता है कि वह जो करता है वह सदैव ही उसके करने के लिए सही बात होती है, चाहे उसके कारणों को हम समझें अथवा नहीं समझें।

चौथा, परमेश्वर हमें हमारे पापों से शुद्ध कर सकता है। परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दी गई व्यवस्था के अनुसार, मृतकों के संपर्क में आने से अशुद्धता होती थी। अध्याय 31 का यह वृत्तान्त दिखाता है कि इस्राएल के युद्ध में जाने से क्या होता

है। युद्ध का अर्थ है मृत्यु, और मृत्यु का अर्थ है अशुद्धता। जो लोग युद्ध में गए हैं वे फिर से शुद्ध कैसे होंगे? युद्ध की लूट कैसे शुद्ध की सकती है? ये महत्वपूर्ण प्रश्न थे; क्योंकि, यदि सिपाही बिना शुद्ध हुए छावनी में आते, तो सारी छावनी - इस्राएल की सारी मण्डली - अशुद्ध हो जाती।

इन प्रश्नों के उत्तर 31:19-24 में मिलते हैं:

> "और तुम लोग सात दिन तक छावनी के बाहर रहो, और तुम में से जितनों ने किसी प्राणी को घात किया, और जितनों ने किसी मरे हुए को छूआ हो, वे सब … को पावन करें।" तब एलिआज़र याजक ने सेना के उन पुरुषों से जो युद्ध करने गए थे कहा, "व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी है वह यह है: सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन, और सीसा, जो कुछ आग में ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा; तौभी वह अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए; परन्तु जो कुछ आग में न ठहर सके उसे जल में डुबाओ। और सातवें दिन अपने वस्त्रों को धोना, तब तुम शुद्ध ठहरोगे; और तब छावनी में आना।"

आयतें 19 और 20 बताती हैं कि सिपाहियों को कैसे शुद्ध होना था और 21 से लेकर 23 तक की आयतें निर्देश देता हैं कि लूट को कैसे शुद्ध करना था। सामान्य रीति से लोगों को शुद्ध करने के लिए धोना, और लूट के (धातु के) सामान को आग में डालना या (अन्य सामान को) जल से धोना था।

मसीही युग में शारीरिक मृत्यु हमें अशुद्ध नहीं करती है और न ही हमें शुद्ध होना होता है। परन्तु पाप आत्मा को दूषित करता है और मारता है (यशा. 59:1, 2; रोम. 6:23; इफि. 2:1)। जब हम पाप में होते हैं, तब हमें शुद्ध या स्वच्छ किए जाने की आवश्यकता होती है। यह स्वच्छ होना कैसे हो सकता है? पुराने नियम के शुद्ध और स्वच्छ होने की प्रक्रियाओं के नए नियम के समकक्ष दूषित हुए शरीरों को धोना नहीं है, वरन मसीह के लहू के साथ आत्मिक संपर्क में आना है (1 पतरस 3:20, 21)। जो अभी तक मसीही नहीं बने हैं उन्हें बपतिस्मा, या जल में डुबकी लेने की आवश्यकता है (विश्वास और पश्चाताप करने के पश्चात), उद्धार पाने के लिए (प्रेरितों 2:38; 22:16)। मसीहियों को मसीह के लहू में निरन्तर स्वच्छ होते रहने की आवश्यकता है (1 यूहन्ना 1:7); ऐसा तब होता है जब हम परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के सतत प्रयास के साथ "ज्योति में चलते हैं।"

पाँचवाँ, परमेश्वर हमारी भेंटों के योग्य है। प्राचीन काल में, एक विजयी सेना, युद्ध के बाद युद्ध की लूट लेकर आती थी। जब इस्राएलियों ने मिद्यानियों को पराजित किया, तो उन्होंने "मिद्यानी स्त्रियों को बाल-बच्चों समेत बन्दी बना लिया; और उनके गाय-बैल, भेड़-बकरी, और उनकी सारी सम्पत्ति को लूट लिया" (31:9)। अध्याय 31 की अंतिम आयतों में, परमेश्वर ने उदाहरण स्थापित किया कि इस्राएलियों द्वारा युद्ध की लूट को कैसे बाँटना है (31:25-54)। लूट को बाँटने की यह प्रक्रिया हमारे लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत करती है।

1. लूट को उनमें जो युद्ध में गए थे और शेष मण्डली में बराबरी से बाँटना

था (31:25-27; देखें 31:32-47)। यह तथ्य हमें स्मरण करवाता है कि आत्मिक युद्ध में केवल उन सिपाहियों को ही "जो अग्रिम पंक्तियों" में हैं, स्मरण करना या आदर देना नहीं चाहिए। जो उनकी सहायता करते हैं और उन्हें कार्य करने के लिए सक्षम करते हैं उन्हें भी उनके परिश्रम का प्रतिफल मिलना चाहिए (फिलिप्पियों 4:17)।

2. लूट का कुछ भाग याजकों को परमेश्वर की भेंट के रूप में देना चाहिए (31:28, 29; देखें 31:36-41)। साथ ही, उसका कुछ भाग लेवियों को भी दिया जाना चाहिए (31:30; देखें 31:42-47), जो "परमेश्वर के निवास की रखवाली" करते थे (31:47)। ये भेंटें हमें स्मरण दिलाती हैं कि हमें जो कुछ भी प्राप्त होता है वह परमेश्वर की भलाई के कारण ही प्राप्त होता है (याकूब 1:17), जिसे हमें परमेश्वर और उसकी कलीसिया को देने के द्वारा उस के साथ बाँटना चाहिए।

3. इस्राएल की सेना के सरदारों ने स्वेच्छाबलि अर्पित की क्योंकि वे धन्यवादी थे कि युद्ध में उनके लोगों में से एक की भी क्षति नहीं हुई थी (31:48-54)। उनकी उदार भेंट मूसा और एलिआज़र द्वारा स्वीकार की गई कि वह "इस्राएलियों के लिये यहोवा के सामने स्मरण दिलानेवाली वस्तु" ठहरे (31:54)। उनकी भेंट हमें बताती है कि हमें परमेश्वर को उदारता से देना चाहिए - केवल इसलिए नहीं क्योंकि हमें यह करने की आज्ञा दी गई है, परन्तु अपने कृतज्ञ हृदयों के कारण।

उपसंहार। मिद्यानियों के दण्ड और इस्राएलियों को देखने के द्वारा हम सामूहिक उत्तरदायित्व के बारे में देखते हैं। एक स्थान जहाँ सामूहिक दोष का ध्यान नहीं किया जाएगा वह है मसीह का न्याय सिंहासन। वहाँ "हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों" प्रतिफल पाएगा (2 कुरि. 5:10)। जब हम परमेश्वर के सामने न्याय के लिए खड़े होंगे, हमारा न्याय केवल जो हमने किया है उस ही के अनुसार होगा।

परमेश्वर कैसा है? (अध्याय 31)

अध्याय 31 में प्रत्यक्ष सभी तथ्य बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण एक तथ्य के साथ जोड़े जा सकते हैं: परमेश्वर का व्यक्तित्व! परमेश्वर कैसा है?

वह अपने लोगों के साथ अपनी पहचान रखता है।

वह पाप को दण्ड देता है। कोई भी परमेश्वर या उसके लोगों का प्रतिरोध निश्चिन्तता से नहीं कर सकता।

वह सार्वभौमिक है, और कभी-कभी हम उसके मार्गों को समझ नहीं सकते हैं; फिर भी हमें उसमें विश्वास करना है और उसका आज्ञाकारी होना है।

वह पवित्र है; ऐसा कोई भी जो अशुद्ध हो, उसके निकट नहीं आ सकता है। जब हम स्वच्छता के खोजी होते हैं तो हमें वैसे करना है जैसा उसने निर्धारित किया है।

वह कृपालु और भला है, जो हम उसके लिए कर सकते हैं या उसे दे सकते हैं,

उसके योग्य है।

परमेश्वर के लिए आपका दृष्टिकोण क्या है? क्या वह उस दृष्टिकोण के अनुसार है या उससे विपरीत है जो अभी प्रस्तुत किया गया है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि परमेश्वर के प्रति हमारा दृष्टिकोण उसके समक्ष हमारे व्यवहार को निर्धारित करेगा। प्रत्युत्तर में, हमारा व्यवहार, फिर हमारी अनन्त नियति को निर्धारित करेगा।

मिद्यानियों का विनाश (अध्याय 31)

अध्याय 31 में दिए गए वृत्तान्त के कारण परमेश्वर के स्वभाव पर प्रश्न उठाए गए हैं। यह कैसे संभव है कि दया और कृपा का परमेश्वर अपने लोगों को बदला लेने के युद्ध की आज्ञा दे? ऐसे युद्ध के संदर्भ में वह कैसे माँग कर सकता है कि निर्दोष लोगों को मारा जाए, जैसे कि मिद्यान के युद्ध के बाद लड़कों के साथ किया गया?

परमेश्वर का मिद्यानियों का नाश करने के लिए कहना पवित्रशास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार था। हम कुछ उदाहरणों को देखते हैं:

1. परमेश्वर वास्तव में कृपालु परमेश्वर है (निर्गमन 34:6), परन्तु वह "दोषी को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा" (निर्गमन 34:7)।

2. मिद्यानी वास्तव में दोषी थे। उन्होंने इस्राएल से पाप करवाया था!

3. परमेश्वर ने मिद्यानियों को इस्राएल से पाप करवाने के लिए दण्ड दिया, उसने पाप करने के लिए अपने लोगों को भी दण्ड दिया।

4. परमेश्वर द्वारा अन्य राष्ट्रों को नाश करने की आज्ञा देने का उद्देश्य था कि वे लोग उसके लोगों को दूषित नहीं करें। अन्यजाति मूर्तिपूजक लोगों के प्रभाव के द्वारा इस्राएल में, दोनों विश्वास और नैतिकताओं के प्रति, स्वधर्म त्याग आ सकता था (और आया भी)। आज्ञा कि जब इस्राएली उस भूमि पर विजयी हों, तब कनान के लोगों का नाश किया जाए या उन्हें खदेड़ दिया जाए धार्मिक आधार पर थी न कि जाति से घृणा करने के आधार पर।

5. पुराना नियम एक सामूहिक उत्तरदायित्व को प्रगट करता है; देह के एक भाग के कार्य के कारण सारी देह को दोषी माना जाता है, और देह का प्रत्येक अंग समस्त देह के पाप के लिए उत्तरदायी माना जाता है। इसलिए वे भी जो (तुलनात्मक रीति से) कम दोषी थे, दोषियों के साथ दण्ड पाते थे।

6. मिद्यानियों के नाश और ऐसी ही अन्य घटनाओं की व्याख्या करने में हमारे साथ समस्या यह है कि हम परमेश्वर की पवित्रता को पूर्णतः समझते नहीं हैं या उसका सही मूल्यांकन नहीं कर पाते हैं। उसके विरुद्ध या उसके लोगों के विरुद्ध पाप करने (जो पहले दोष के तुल्य है) के द्वारा उसकी पवित्रता का उल्लंघन करने के परिणाम बहुत गंभीर हैं।

हम चाहे परमेश्वर के मार्गों को समझने नहीं पाते हैं, किन्तु हम यह विश्वास रख सकते हैं कि जो वह करता है (या जो वह चाहता है) वह न्यायोचित और सही

है। हमें जो सही लगता है उसके आधार पर परमेश्वर के व्यवहार का न्याय करने के स्थान पर, हमें परमेश्वर के कार्यों से सीखना चाहिए कि उसकी दृष्टि में क्या सही है।

दोषियों के साथ निर्दोष (31:1-12)

पुराने नियम में सामूहिक उत्तरदायित्व होने का विचार है। अर्थात, एक व्यक्ति का दोष लोगों के सारे समूह को दूषित कर सकता था; और समूह का दोष समूह के प्रत्येक व्यक्ति को दूषित करता था, चाहे गलती में वे व्यक्तिगत रीति से सम्मिलित नहीं भी रहे हों। जब "सामूहिक दोष" का दण्ड दिया जाता है, तो सारा समूह दण्ड पाता है, यद्यपि सभी दोषी नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए यहोशू 7 में, परमेश्वर ने आकान के व्यक्तिगत पाप का दोष इस्राएल को ऐ के युद्ध में पराजय के द्वारा दिया, जिसमें छत्तीस इस्राएली मारे गए। आकान के दोष में सारा इस्राएल सहभागी था, और उस दण्ड में उसके परिवार की मृत्यु भी सम्मिलित थी।

एक प्रकार से, सामुदायिक उत्तरदायित्व आज भी लागू है। जब कोई व्यक्ति कानून का उल्लंघन करता है और जेल जाता है तो उसकी गलती की कीमत सारे परिवार के लोग चुकाते हैं। कलीसिया का सदस्य जो पाप करता है वह अपने पाप के व्यक्तिगत परिणाम भोग सकता है, परन्तु उसका पाप सारी कलीसिया को भी दुखी करता है।

यह सिद्धान्त मिद्यानी छावनी के नाश किए जाने को, जिनमें कुछ निर्दोष भी सम्मिलित थे, समझा सकता है। वे सब एक दोषी राष्ट्र का भाग थे; इसलिए मिद्यानी छावनी में जितने थे वे सभी सामूहिक रीति से दोषी तथा दण्ड के योग्य थे।

इस घटना में एक अन्य महत्वपूर्ण बात थी, प्रभाव। यदि मिद्यानी लड़कों को इस्राएलियों के मध्य रहने की अनुमति दे दी जाती, तो वे इस्राएलियों को परमेश्वर से विमुख होने के लिए प्रभावित कर सकते थे। संभव है कि छोटी आयु में ही वे मिद्यानियों के झूठे धर्म और गिरी हुई नैतिकता में इतने दृढ़ हो गए थे कि इस्राएलियों के मध्य उनकी उपस्थिति इस्राएलियों के लिए परमेश्वर के सम्मुख खड़े रहने में लगातार बना रहने वाला खतरा हो जाती। इसलिए मिद्यानी लड़कों का नाश उसी प्रकार था जैसे शरीर के किसी संक्रमण हुए भाग को काट कर निकाल दिया जाता है जिससे संक्रमण और न फैलने पाए।

निर्दोष मिद्यानियों को नाश करने के संबंध में सबसे अच्छा विचार यही है कि सीधे से कह दिया जाए, "परमेश्वर ने किया, इसका तात्पर्य है कि वह सही और उचित और न्यायसंगत था!" बहुधा, जब परमेश्वर के स्वभाव से संबंधित प्रश्न उठते हैं, तो हम समस्या को उलट दिशा से सुलझाने का प्रयास करते हैं। हम पूछते हैं, "हम यह कैसे दिखा सकते हैं कि परमेश्वर न्यायसंगत, निष्पक्ष, प्रेमी, और सही है?" इसके स्थान पर हमें कहना चाहिए कि परमेश्वर परमेश्वर है: इसका तात्पर्य है कि वह न्यायसंगत, निष्पक्ष, प्रेमी, और सही है - हम चाहे उसके कार्यों को समझाने पाएँ या न समझाने पाएँ!

अवश्य ही, इस तथ्य के कारण कि पुराने नियम के समय में परमेश्वर की माँग थी कि उनके पाप के लिए लोगों के एक समूह का नाश किया जाए यह नहीं समझ लेना चाहिए कि आज कलीसिया को अविश्वास अथवा अविश्वासियों के नाश के लिए बल का प्रयोग करना चाहिए। मसीह का राज्य "इस संसार का नहीं है" (यूहन्ना 18:36)। शैतान, पाप, और त्रुटि के विरुद्ध उनके युद्ध में जिस हथियार का प्रयोग करने की मसीहियों को अनुमति है वह है परमेश्वर का वचन (इफि. 6:17)।

जब हम कहते हैं कि परमेश्वर पक्षपाती है, हम मिट्टी के ढेर के समान हैं जो इस कारण शिकायत कर रहा है क्योंकि कुम्हार ने उसे वैसा नहीं बनाया जैसा वह बनना चाहता था। मिट्टी को क्या अधिकार है कि वह कुम्हार को बताए कि उसे कैसे कार्य करना है? (देखें रोम. 9:20, 21.) यह कहना कि "मैं परमेश्वर में इसलिए विश्वास नहीं करूँगा क्योंकि वह बुरी बातों की अनुमति देता है या उन्हें करवाता है," यह कहने के समान है कि "क्योंकि मौसम ने मेरे घर और खेत की हानि की है इसलिए अब से मैं मौसम में विश्वास नहीं रखूँगा।" हम न तो सूर्य को और न ही वर्षा को नियंत्रित कर सकते हैं; परन्तु जब वे हमें अप्रसन्न करते हैं तो हम उनके अस्तित्व के न होने का नाटक नहीं कर सकते हैं। इसी प्रकार हमें परमेश्वर के अस्तित्व को इसलिए बरखास्त नहीं कर देना चाहिए क्योंकि वह हमारी अपेक्षाओं के अनुसार नहीं है।

परमेश्वर को न्याय के लिए जाँचने करने का विचार मूर्खतापूर्ण है। हमारे निष्पक्ष होने की समझ का आधार परमेश्वर ही है। हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि हम न्याय के विषय अपने सृष्टिकर्ता से अधिक जानते हैं।

समाप्ति नोट

[1]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 209. [2]ग्लीसन एल. आर्चर, *एन्साइक्लोपीडिया ऑफ बाइबल डिफिकल्टीस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन पबलिशिंग हाउस, 1982), 142-43, 157-59. [3]पवित्रशास्त्र के बाहर, "निषेध" की विचारधारा मोआबी पत्थर के लेख में मिलती है, जहाँ राजा मेशा ने नेबो के सभी इस्राएली निवासियों को मरवा डाला, उन्हें अपने देवता किमोश के लिए "नाश करने को अर्पित" करने के द्वारा। (पैट्रिक डी. मिलर, "मोआबईट स्टोन," *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एन्साइक्लोपीडिया*, रिव. एडिटर, एडिटर ज्योफ्रे डब्ल्यू. ब्रोमिले में [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986], 3:396.) [4]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 387. [5]सी. एफ़. कैल एन्ड एफ़. डलेच, *द पेन्टाटुक*, वोल. 3, ट्रांसलेटर जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेन्ट्री ओन द ओल्ड टेस्टामेन्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी तिथि अज्ञात), 229-30.